परिशिष्ट

भारतीय इस्लामिक स्थापत्य

अध्ययन विधि

सन्दर्भ साहित्य का परिशीलन कर विद्यार्थियों को इन पक्षों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करना चाहिये।
विद्यार्थियों को परस्पर परिचर्चा कर शिक्षक के साथ संवाद करना चाहिये।

भारतीय इस्लामिक स्थापत्य के कुछ प्रमुख उदाहरण के चित्र आगे दिये गये हैं इन उदाहरणों एवं अन्य आपके संज्ञान में आये स्थापत्य के आधार पर स्वअध्ययन करें :–

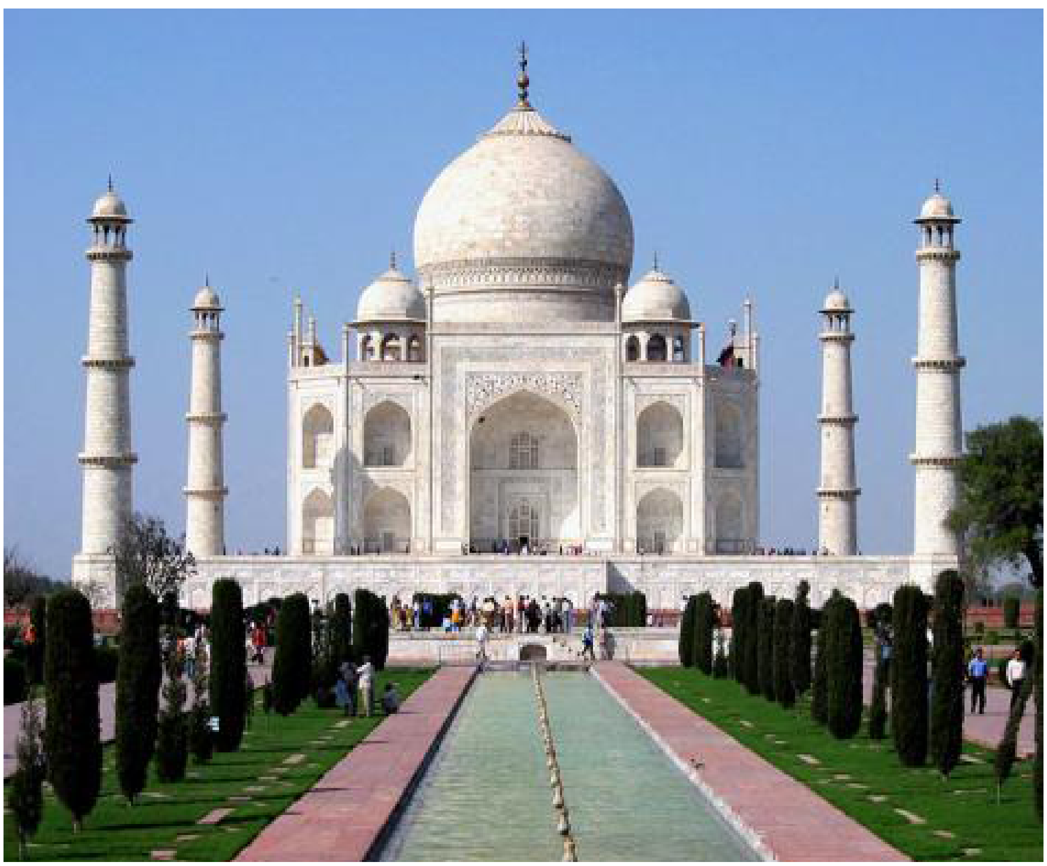

ताजमहल

कुतुबमीनार

लाल किला

विशिष्ट परिभाषाएँ

(1) अग्रगामी रंगतें

शुद्ध रंग जो अमिश्रित होने के कारण बहुत चमकदार होते हैं और अन्य रंगों से आगे बढ़ते हुए प्रतीत होते हैं। जैसे लाल एवं नारंगी आदि रंग अन्य समस्त रंगों से आगे बढ़ते और शीतल रंग पीछे हटते हुए प्रतीत होते है। मूलतः गर्म रंग ही अग्रगामी होते हैं।

(2) अग्रभूमि

चित्रभूमि का निचला स्थान जो दर्शक को अपने निकट प्रतीत होता है।

(3) अतिप्रकाश

वस्तु का वह भाग जहाँ सर्वाधिक प्रकाश होता है।

(4) अन्तराल

चित्रभूमि का समस्त विस्तार। यह दो प्रकार का होता है – सक्रिय एवं सहायक। सक्रिय अन्तराल मुख्य आकृतियों के समूह से निर्मित होता है और सहायक अन्तराल पृष्ठभूमि से निर्मित होता है।

(5) आलेखन

ऐसा अंश अथवा खंड (इकाई) जिसकी आवृत्तियों द्वारा चित्र पूर्ण किया जाये।

(6) अभिप्राय

किसी विषय, आकृति अथवा घटना का बारम्बार अंकित किया जाने वाला परम्परागत रूप। जैसे : स्वस्तिक, ताण्डव, योगी, मेडोन्ना, ईसा की सूली आदि।

(7) असम्मात्रा

चित्रसंयोजन में आकृति–रचना को सम्मात्रिक न होने देना। सम्मात्रिकता से चित्र में जहाँ कृत्रिमता अथवा जड़ता आने की आशंका हो वहाँ सौन्दर्य की दृष्टि से असम्मात्रिक आकृतियों की रचना की जाती है।

(8) आकृति

किसी भी माध्यम में उपयुक्त सामग्री द्वारा प्रस्तुत किया गया रूप। मुख्यतः मानवीय, पशु–पक्षी एवं वानस्पतिक जगत के रूपों को ही इस वर्ग में रखा जाता है।

(9) आकृति मूलक

मानवाकृति का आधार लेकर अंकित की जाने वाली कलाकृतियाँ।

(10) आर्द्र भित्ति चित्रण

भित्ति चित्रण की वह प्रविधि जिस में दीवार के गीले पलस्तर पर ही पतले–पतले रंग लगाये जाते हैं जो पलस्तर सूखने के साथ ही पक्के हो जाते हैं।

(11) अलंकारिक

आकृतियों का वह स्वरूप जिसमें प्राकृतिक रूपों में सूक्ष्मता एवं ज्यामितियता के प्रभाव से सौन्दर्य उत्पन्न किया जाता है।

(12) इण्टेग्लियो

काष्ठ, धातु अथवा लिनोलियम आदि की आकृतियां खोदकर या छीलकर स्याही लगाकर कागज पर छापना।

(13) इम्पेस्टो

पर्याप्त गाढ़े तैल अथवा टेम्परा रंगों से चित्रण करना। इस प्रकार के चित्रों का प्रयोग तूलिका एवं

चाकू से किया जा सकता है।

(14) उच्च कलाएँ

दृश्य कलाओं में से चित्र, मूर्ति एवं वास्तु कलाओं को उच्च माना जाता है। कशीदाकारी, आभूषण, पात्र, खिलौनों एवं बुनाई को निम्न कलाओं में रखा जाता है।

(15) उपयोगी कलाएँ

वे कलाएं जिनका प्रधान लक्ष्य उपयोग रहता है जैसे हस्तकलाएं (हैण्डीक्राफ्ट) आदि। इन्हें प्रायः निम्न कलाएँ भी कहा जाता है।

(16) उपवर्ण

तृतीय श्रेणी के रंग जो प्राथमिक एवं द्वितीय श्रेणी के मिश्रित वर्णों के मिश्रण से निर्मित किये जाते हैं।

(17) उष्ण वर्ण

लाल तथा नारंगी रंग जो अग्रगामी भी कहे जाते हैं। इनके सहयोग से बनने वाले कत्थई तथा उन्नावी रंग भी इसी वर्ग में आते हैं।

(18) एकवर्णी रंग योजना

एक ही वर्ण के विभिन्न बलों से चित्र पूर्ण करना। विभिन्न बल निर्मित करने हेतु श्वेत एवं काले रंग का मिश्रण किया जाता है।

(19) ऐकेडमिक पद्धति

किसी देश की प्राचीन एवं शैक्षणिक दृष्टि से मान्य परम्पराओं के आधार पर चित्रांकन करना। इस पद्धति में कलाकार अपनी इच्छानुसार कोई परिवर्तन नहीं कर सकता अतः इसमें मौलिकता नहीं होती।

(20) एक्शन पेन्टिंग

चित्र भूमि पर रंग छिड़कने, फेंकने, टपकाने अथवा बहा देने से जो अमूर्त प्रभाव उत्पन्न होते हैं। उन्हें अंत में संयोजन की दृष्टि से कुछ सुधार दिया जाता है। इस पद्धति का प्रमुख प्रयोक्ता अेमेरिकी चित्रकार जैकसन पौलाक था।

(21) ओप

चमकदार तेल या वार्निश माध्यम के प्रयोग से कलाकृति की बढ़ी हुई चमक। इसकी प्रायः तीन पद्धतियां हैं। प्रथम पद्धति में प्रत्येक रंग में अधिक माध्यम का मिश्रण किया जाता है। द्वितीय विधि में चित्र–रचना के उपरान्त अति प्रकाश वाले भागों में स्थानीय हल्के रंग को माध्यम में मिलाकर पुनः लगा देते हैं जिससे वे स्थान बहुत अधिक चमकने लगते हैं। तृतीय विधि में सूख जाने के उपरान्त सम्पूर्ण चित्र पर ही वार्निश अथवा तेल की परत चढ़ा देते हैं जो सूखकर चित्र के ऊपर चमकदार झिल्ली बना देती है।

(22) कला

कुशलतापूर्वक किया गया कोई भी कार्य कला कहा जाता है किन्तु सीमित अर्थ में शिवत्व की उपलब्धि के लिए सत्य की सौंदर्यमयी अभिव्यक्ति ही सच्ची कला है।

(23) कला–ललित एवं उपयोगी

जिनमें सौंदर्य अथवा अभिव्यंजना का उद्देश्य प्रमुख रहता है उन्हें ललित कलाएं कहते हैं। जिनमें उपयोगिता का ध्यान रखा जाता है उन्हें उपयोगी कलाएं कहा जाता है। उपयोगी कलाओं को ही प्रायः शिल्प भी कहा जाता हैं किन्तु शिल्प वस्तुतः कलाकृति की रचना से सम्बन्धित पक्ष है जो ललित कलाओं में भी है और उपयोगी कलाओं में भी है।

(24) कला–दृश्य तथा श्रव्य

दृष्टि से संबंधित कलाओं को दृश्य एवं कानों से संबंधित कलाओं को श्रव्य कहा जाता है। चित्र, मूर्ति वास्तु आदि दृश्य कलाएँ और कविता, संगीत आदि श्रव्य कलाएँ है। दृश्य कलाओं को स्थानाश्रित एवं श्रव्य कलाओं को समयाश्रित भी कहा जाता है।

(25) कांच–चित्रण

कांच पर चित्रांकन कर दरवाजों अथवा खिड़कियों में लगा देते हैं। इसके हेतु विशेष प्रकार के रंग अलग बनाये जाते हैं। विभिन्न रंगों के कांच के टुकड़े सादा काँच के ऊपर चिपका कर भी इस प्रकार के चित्र अथवा आलेखन बनाये जाते हैं।

(26) क्षितिज रेखा

चित्र भूमि की सभी आकृतियों की रेखाएँ यदि बढ़ा दी जायें तो वे क्षितिज रेखा पर जाकर मिल जाती हैं। इसे दृष्टि तल भी कहते हैं। चित्र की आकृतियों के समस्त तल इस रेखा के समानान्तर, ऊपर या नीचे होते हैं।

(27) खनिज वर्ण

मिट्टी, पत्थर आदि पदार्थो से निर्मित रंग जैसे गेरू, खड़िया, रामरज, हिरोंजी आदि।

(28) वयन (पोत)

कलाकृति में प्रयुक्त सामग्री से उत्पन्न होने वाला धरातलीय प्रभाव। यह चिकना अथवा खुरदरा आदि अनेक प्रकार का हो सकता है। इसकी रचना के तीन स्रोत हैं – प्राप्त, अनुकृत एवं मौलिक।

(29) गढ़नशीलता

कलाकृति में उभार तथा गहराई के प्रयोग से त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करने की विधि। इससे वस्तु में घनत्व की सृष्टि होती है।

(30) ग्राफिक कलाएँ

वे कला रूप जिनमें पहले किसी सतह पर उल्टा चित्र अंकित किया जाता है। फिर उस पर स्याही लगाकर सीधा छापा जाता है। इसके हेतु प्रायः पत्थर, काष्ठ, लिनोलियम एवं धातु की प्लेट की सतह का प्रयोग किया जाता है।

(31) घनत्व

किसी वस्तु अथवा आकृति का त्रिआयामी स्वरूप।

(32) छाया–प्रकाश

रंग के हल्के–गहरे बलों अथवा श्वेत–काले के प्रयोग से आकृतियों के प्रकाशित एवं अंधेरे वाले भागों का चित्रण।

(33) ज्यामितिक रूप

ज्यामिति में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख आकृतियों – घन, बेलन, शंकु एवं पिंड – पर आधारित रूप।

(34) तटस्थ रंग

श्वेत तथा काले वर्ण ये वस्तुओं के छाया–प्रकाश को प्रदर्शित करते हैं।

(35) तान

वस्तु पर छाया अथवा प्रकाश की मात्रा। इससे रंगों के विभिन्न बल अथवा मान प्रदर्शित करते हैं।

(36) निर्वर्ण रंग–योजना

ऐसी रंग योजना जिसमें रंग–हीनता के समान अनुभूति हो जैसे कत्थई, बादामी, काला।

(37) पुंज

रंग अथवा छाया–प्रकाश से निर्मित सीमा–रेखा–विहीन क्षेत्र।

(38) पृष्ठभूमि

(1) चित्रतल का वह भाग जो प्रायः क्षितिज तथा आकाश से संबंधित रहता है।

(2) किसी चित्र में मुख्य आकृतियों के पीछे अंकित वातावरण अथवा दृश्य।

(39) फिक्सेटिव

चित्र बन जाने पर स्प्रे किया जाने वाला घोल। यह प्रायः पेस्टल अथवा पेन्सिल द्वारा निर्मित चित्रों पर छिड़का जाता है। इससे रंग स्थायी हो जाते हैं।

(40) मान

किसी भी रंग का छाया अथवा प्रकाश के विचार से गहरा या हल्कापन। इसे तान का मान भी कहते हैं।

(41) बाध्य पदार्थ

वह पदार्थ जो रंगों के चूर्ण के कणों को बाँधने हेतु मिलाया जाता है। जैसे तेल,गोंद या सरेस।

(42) बिन्दुवर्तना

छोटे छोटे बिन्दुओं के द्वारा छाया–प्रकाश देना अथवा रंग भरना।

(43) भित्ति चित्र

जब तक भित्ति पर चित्र अंकित न किया जाय तब तक वह केवल भित्ति कहलाती है। भित्ति पर अंकित चित्र को म्यूरल कहते हैं। कैनवास, बोर्ड अथवा बड़े आकार के कागज पर बने ऐसे चित्र को (जो भित्ति पर लगाये जाने के उपयुक्त हो) भी म्यूरल कहा जाता है।

(44) भित्ति चित्रण

इसकी प्रायः दो परम्परागत प्रविधियाँ हैं – (1) आर्द्र भित्ति चित्रण तथा (2) शुष्क भित्ति चित्रण। प्रथम विधि में दीवार के गीले पलस्तर पर तथा द्वितीय विधि में सूखे पलस्तर पर चित्रण किया जाता है।

(45) भूमि

चित्र का वह स्थान अथवा क्षेत्र जिस पर चित्र की रचना की जाती है।

(46) मणिकुट्टिम

भित्ति अथवा भूमि पर रंगीन पत्थर एवं काँच के टुकड़ों द्वारा बनाये गये चित्र अथवा अभिकल्प (डिजाइन)।

(47) मध्य तान

किसी भी वर्ण का वह बल जो काले तथा श्वेत के मध्य बल अर्थात् भूरे बल के अनुरूप हो।

(48) मध्यभूमि

चित्रभूमि का मध्य भाग। इस पर प्रायः चित्र की प्रमुख आकृतियां स्थित रहती हैं। इसके पीछे पृष्ठभूमि एवं नीचे अग्रभूमि कहलाती है।

(49) माध्यम

वह तरल पदार्थ जिसमें रंग घोल कर चित्रांकन किया जाता है। इसे रंग का वाहन भी कहते हैं। जल, तैल, टेम्परा एवं शुष्क – ये प्रमुख माध्यम हैं।

(50) मिश्रित वर्ण

वे वर्ण जो प्राथमिक वर्णों के मिश्रण से बनते हैं।

(51) रूप

भोग्य सामग्री को काट–छाँट के साथ प्रस्तुत करने से निश्चित क्षेत्रों में विभाजित चित्र–भूमि।

(52) रेखा

निकट अथवा दूर अंकित बिन्दुओं के मध्य गति और निरन्तरता का आभास।

(53) रेखांकन

चित्रण की एक प्रविधि जिसमें केवल रेखाओं के द्वारा ही आकृति रचना की जाती है।

(54) रेखा वर्तना

छोटी–छोटी समान्तर रेखाओं के द्वारा आकृतियों में छाया का अंकन।

(55) लोक चित्रण

सामान्य जन–जीवन का चित्रण जो धार्मिक विषयों से पृथक हो।

(56) वर्ण

रंगीन पदार्थों का दृष्टि को होने वाला संवेदनात्मक अनुभव प्रकाश का गुण है।

(57) वर्ण गुण

वर्ण के तीन गुण हैं – (1) रंगत (2) बल अथवा मान तथा (3) सघनता।

(58) वर्ण एकता

किसी चित्र में वर्ण वृत्त के अनुसार लगाये गये निकटवर्ती उष्ण अथवा शीतल रंगों की योजना जैसे नारंगी–लाल–बैंगनी।

(59) वर्णिका

किसी चित्र में प्रयुक्त रंगों का विशेष समूह।

(60) वर्ण वृत्त

उष्ण तथा शीतल छः रंगों का चक्र एवं ओस्टवाल्ड का आठ रंगों का चक्र।

(61) वातावरणीय प्रभाव

स्थान, ऋतु, समय अथवा भावना के अनुसार चित्र में रंगों तथा छाया–प्रकाश की योजना।

(62) वायवीयता

छाया–प्रकाश एवं गढ़न शीलता के अभाव से आकृतियों में उत्पन्न होने वाला हल्कापन।

(63) वाश

चित्रतल पर रंग की पतली–पतली सतह लगाना। जब यह स्थानीय रूप से लगाया जाता है तो इसे स्थानीय वाश कहते हैं और जब सम्पूर्ण चित्र पर लगाया जाता है तो इसे सम्पूर्ण वाश कहते हैं।

(64) शीतल वर्ण

वे वर्ण जो शीतलता का प्रभाव उत्पन्न करते हैं। जैसे नीला और हरा।

(65) स्वर्णानुपात

यूनानियों द्वारा विकसित अनुपात जिससे सौंदर्यानुभूति में सहायता मिलती है। इसका क्रम 2 : 3 : 5 : 8 : 13 : 21 : आदि है।

पारिभाषिक शब्दावली

अकादमी - Academy
अक्षपटल - Retina
अचेतन - Unconscious
अज्ञेय तत्व - Noumenon
अतियाथार्थवाद - Surrealism
अतिवाद - Extremism
अतीन्द्रिय - Transcendental
अनुकरण - Imitation
अनुकृति - Copy
अनुपात - Proportion
अनुभव - Experience
अनुरूप - Analogous
अनुरेखन - Tracing
अन्तराल - Space
अन्विति - Unity
अपकर्ष - Anticlimax
अपरिष्कृत - Coarse
अपारदर्शी - Opaque
अभिज्ञान - Recognition
अभिधा - Denotation
अभिप्राय - Motif
अभियोजन - Adjustment
अभिवृत्ति - Attitude
अभिव्यंजना - Expression
अभ्यास - Practice, Training
अमूर्त - Abstract
अर्द्धचित्र - Relief
अलौकिक - Imaginative, Supersensus
अलंकरण - Decoration
अलंकार - Rhetor
अलंकृत शैली - Decorative-Style
अवधारणा - Concept
अश्लील - Obscene
असंगति - Anamoly
अंकन - Drawing
अंग - Limb, Canon
अंचल - Region
आकार - Size
आकृति - Figure,Shape,Form
आकृतिमूलक - Figurative
आख्यान - Fable
आघात - Accent
आत्म स्वीकृति - Confession
आदर्श - Model, Ideal
आदर्शवाद - Idealism
आदिम - Primitive
आदिरूप - Prototype
आद्यबिम्ब - Archetype
आनन्द - Delight
आभास - Semblence,Appearance
आयाम - Dimension
आरेख - Diagram
आरोपण - Projection
आलम्बन - Plumb line
आवेग - Impulse
आहार्य - Ariculate, Acquired
इच्छा - Desire
इन्द्रियवाद - Sensualism
उज्ज्वल - Bright
उत्कीर्ण - Engraved
उत्खनन - Engraved
उत्तरोत्तर क्रम - Successive order
उदात्त - Lofty,Sublime
उद्‌भावना - Ideation
उद्दीपक - Stimulus
उपमा - Simile
उपाख्यान - Episode
ऊर्ध्व - Vertical
एकाकी - Solitary
ऐन्द्र - Sensuous
ओप - Glaze, Patina
औचित्य - Propriety, Decorum
कथानक रुढ़ि - Motif
कलम - School
कला - Art
कलापारखी - Connoiseus
कल्पना - Imagination
कल्पित - Imaginary
कर्णवत् - Diagonal
कसौटी - Criterion
काम - Pleasure
काल - Time, Period
काल दोष - Anachronism
कौतूहल - Interest,Eagerness
कौशल - Craftsmanship,Virtuosity
क्षैतिज - Horizontal
गति - Movement, Motion
गतिशील - Dyanamic
गीतात्मक - Lyrical
घनत्व - Solidity, Volume

चमत्कार - Amazement
चारण - Bard
चारु - Lovely
चित्तवृत्ति - Fluctuations of mind
चित्र - Picture, Painting
चित्रकला - Art of Painting
चित्रित - Painted
चिन्तन - Thinking
चिह्न - Sign
चेतन - Conscious
चेतना - Sentience
चेहरा - Face, mask
छाया - Shade
छायाचित्र - Silhoutte
जटिलता - Complication
ज्यामितिक - Geometric
ठप्पा - Seal
तनाव - Tension
तादात्म्य - Empathy
तान - Tone
ताम्र - Copper
ताल - Head,Cannon of Proportion
दशा - Condition
दिव्यानन्द - Ecstacy
दूरी - Distance
दृश्य - Visible, Scene
दृष्टि - Vision, Sight
नन्दतिक - Aesthetic
नियम - Rule, Canon of proportion
नियमन - Control
निरूपण - Portrayal
निष्कर्ष - Empitome
निष्ठा - Sincerity
निष्पादन - Execution
नीतिनिरपेक्ष - Amoral
नेत्रीय - Optical
नैतिक - Moral
नैसर्गिक - Innate, Natural
पर निरपेक्ष - Exclusive
परिमाण - Quantity
परिष्कार - Polish, Refinement
पर्यवेक्षक - Observer
पर्यावरण - Environment, Milieu
पहेली - Riddle, Maze
पात्र - Character, Pot
पार्श्व - Side
पार्श्व दृष्टि - Side View, Profile
पुराण कथा - Myth
पुरातन - Archaic
पूरण - Filling
पूर्णरूप - Prototype
पूर्वापर क्रम - Preceding Order
पूर्वाभास - Foreshadow
प्रकार - Genre, Kind
प्रकृत - Naivite
प्रक्षेपण - Projection
प्रतिक्रिया - Reaction
प्रतिच्छाया - Shadow
प्रतिनिधित्व - Representation
प्रतिपादक - Exponent
प्रतिबिम्ब - Image, Reflection
प्रतिभा - Talent
प्रतिमा - Image
प्रतिस्थापना - Antithesis
प्रतीक - Symbol
प्रत्यय - Idea
प्रभाववाद - Impressionism
प्रभाविता - Dominance
प्रमाण - Size
प्रविधि - Technique
प्रशंसा - Praise
प्रसंग संकेत - Alusion
प्रस्तुति - Representation
प्रौढ़ता - Maturity
बल - Value,Emphasis
बहुदेववाद - Polytheism
बिम्ब - Image, Model
बोध - Perception
भाव - Emotion, Mood
भावना - Feeling
भूदृश्य - Land Scape
मनोदृष्टि - Attitude
मनोविकार - Emotion
मनोहर - Seductive
मान - Value
मानवचित्रण - Life Painting
मानसिक - Mental, Intellectual Rational
मिथ्याभास - Hallucination
मूर्त - Concrete, Formal,Morphological
मूलप्रवृत्ति - Instinct
मूल्य - Value
यथार्थवाद - Realism
युक्ति - Skill
रचना - Creation
रस - Aesthetic Delight
रसानुभव - Aesthetic experience
रसास्वादन - Appreciation
रसिक - Critic
रीति - Manner

रूपान्तर - Adaptation, Transformation
रोमांच - Thrill
लक्षण - Attribute, Sign, Symbol
लय - Rhythm, Melody
ललित - Fine
ललित कल्पना - Fancy
लालित्य - Grace
लावण्य - Charm
लोककला - Folk Art
लोकोत्तर - Supersensous
वयन - Texture
वर्ण - Colour
वर्तना - Shading
वर्तिका - Brush
वस्तुनिष्ठ - Objective
वास्तविक - Actual, Real
विकास - Development
विश्वसनीय - Believable
विषयवस्तु - Content
विस्तरण - Elaboration
विस्तार - Extension
व्यवहार - Behavior
व्यंग्य - Sugestive
शास्त्रीय - Classical
शिल्प - Craft
शिल्पकारिता - Craftsmanship
शिष्टता - Decorum
शैक्षणिक - Academic
शैली - Style, Diction
श्रृंगार - Erotice
श्रृंगारिक - Erotic
सत्य - Face
सत्याभास - Verisimilitude
सद्य - Instantly
समन्वय - Synthesis
समाधि - Concentration
सम्प्रदाय - School
सम्प्रेक्षण - Communication
सहज - Spontaneous, Naive
सहयोग - Unity
सक्रान्ति - Transition
संगति - Consistency
संयोजन - Composition
संयोग - Accident
संरचना - Structure
संवेदन - Sensation
संवेदनशील - Sensitive
संवाहन - Conduction
सादृश्य - Similitude
साधारणीकरण - Generalisation
सामंजस्य - Concordance, Harmony
सिद्धान्त - Principle
सुन्दर - Beautiful
सूक्ष्म - Abstract, Mycoroscopic
सृजनात्मक - Creative
सौम्यरूप - Idyll
सौंदर्य - Beauty
सौदर्यशास्त्र - Aesthetics
स्तर - Layer, Standard
स्थायीभाव-Sentiment,Permanentmood
स्थिति - Situation
स्थिर - Static
स्वप्न चित्र - Fantacy
हरण - Plagiarism

प्रमुख संग्रहालय

(1) राष्ट्रीय संग्रहालय, जनपथ, नई दिल्लीः देशका सबसे महत्वपूर्ण संग्रहालय है जिसमें सिन्धुघाटी से लेकर अर्वाचीन तक की कलाकृतियाँ विभिन्न वीथिकाओं में प्रदर्शित हैं।

(2) राष्ट्रीय आधुनिक कलादीर्घा, जयपुर हाऊस, नई दिल्लीः देश में समसामयिक कला एवं आधुनिक कलाकृतियों का महत्वपूर्ण संग्रहालय है। जिसमें कम्पनी शैली, बंगाल स्कूल से लेकर आज तक के कलाकारों की कृतियाँ संगृहित हैं।

(3) पुरातत्त्व संग्रहालय, लालकिला, नई दिल्लीः

(4) प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूजियम, मुम्बईः 1905 में इस महत्त्वपूर्ण संग्रहालय की नींव रखी गई एवं आज यह एक विशाल संग्रहालय है।

(5) दी इंडियन म्युजियमः 27, जवाहर लाल नेहरूमार्ग,कोलकाता,स्थापना सन् 1875, भरहूत के महत्त्वपूर्ण शिल्पों के अतिरिक्त कई महत्त्वपूर्ण कृतियां संग्रहीत।

(6) दी विक्टोरिया मेमोरियल म्यूजियम क्वीन्स वे, कोलकाताः इस संग्रहालय में भारतीय एवं यूरोपीयन कलाकारों की कृतियां संग्रहीत हैं।

(7) राजकीय संग्रहालय एवं आर्ट गैलेरी, पेंटनरोड, एग्मोर चैन्नईः स्थापना सन् 1909 में, इसमें अमरावती स्तूप के शिल्पखंड प्रदर्शित हैं। दक्षिण भारतीय कांस्य प्रतिमाओं का महत्त्वपूर्ण संग्रह एवं आधुनिक कलाकारों की कृतियों की अलग आर्ट गैलेरी है।

(8) दी फोर्ट सेंट जॉर्ज म्युजियम, बीच रोड, चैन्नई।

(9) दी केलिको म्यूजियम, शांतिबाग, अहमदाबादः भारतीय हाथकरघा व बुनाई की कलात्मक सामग्री का महत्त्वपूर्ण संग्रहालय।

(10) बडोदा म्यूजियम एण्ड पिक्चर गैलेरी, सयाजी पार्क, बडोदरा।

(11) भारत भवन रूपंकर म्यूजियम, भोपाल, लोककलाओं एवं समसामयिक कलाकृतियों का महत्त्वपूर्ण संग्रह।

(12) उड़ीसा स्टेट म्यूजियम, जयदेव मार्ग, भुवनेश्वर।

(13) दी आर्केलोजिकल म्यूजियम, ओल्डगोआ, गोआ।

(14) आसाम राज्य म्यूजियम, गुहाटी, आसाम।

(15) सलारजंग म्यूजियम, हैदराबाद, पूर्वी एवं पश्चिमी कला का महत्त्वपूर्ण संग्रहालय।

(16) पुरातत्व संग्रहालय, खजुराहो (मध्यप्रदेश)।

(17) राजकीय संग्रहालय, संग्रहालय मार्ग, मथुरा (उत्तर प्रदेश), कुषाणकालीन मूर्तियों का महत्त्वपूर्ण संग्रह।

(18) राजकीय संग्रहालय, बुद्ध रोड, पटना।

(19) राजा दिनकर केलकर म्यूजियम,पूना।

(20) तंजोर आर्ट गैलेरी, पैलेस बिल्डिंग, तंजोर (तमिलनाडू)।

(21) राजकीय संग्रहालय,तिरुअनन्तपुरम, केरल।

(22) भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, कलामनीषी रायकृष्णदास के निजीप्रयासों से भारतीय कला की श्रेष्ठ कृतियों का संग्रह।

इसी तरह राजस्थान के महत्त्वपूर्ण कला केन्द्रों एवं कई शहरों में राजकीय एवं निजी संग्रह जनता के अवलोकनार्थ स्थापित किये गये हैं।

(23) राजकीय सग्रंहालय जयपुर, अलवर, कोटा,बीकानेर, उदयपुर, जोधपुर भारतपुर, महाराणा उदयपुर, सवाई माधोसिंह म्यूजियम जयपुर आदि में भी महत्वपूर्ण कलाकृतियों का संग्रहालय हैं।

(24) आधुनिक कला संग्रहालय रवीन्द्र मंच जयपुर, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, पश्चिम क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर,लोक कला मंडल उदयपुर भी राजस्थान की कला के प्रमुखदर्शनीय केन्द्र हैं।

प्रमुख कला शिक्षण संस्थाएँ

(1) सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, म.गा. रोड, मुम्बई।
(2) कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, चैन्नई।
(3) कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, कुम्भकोण्म जि. तंजोर, तमिलनाडु।
(4) कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, जवाहरलाल नेहरू मार्ग कोलकाता।
(5) रवीन्द्र भारतीय विश्वविद्यालय द्वारकानाथ टैगोर लेन, कोलकाता।
(6) कला भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पं. बंगाल।
(7) ललितकला संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
(8) कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स, टैगोर मार्ग, लखनऊ।
(9) ललितकला संकाय एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ोदा।
(10) सी.एन. कॉलेज ऑफ आर्ट, ऐलिसब्रिज, अहमदाबाद।
(11) नेशनल स्कूल ऑफ डिजाईन, पालड़ी, अहमदाबाद।
(12) गोआ कॉलेजऑफ आर्ट, मीरमार, पणजी, गोआ।
(13) दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, तिलक मार्ग, नई दिल्ली।
(14) ललित कला संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
(15) गवर्मेन्ट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, मसकटेंक, हैदराबाद।
(16) कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट, शांन्तिपुर, गुवाहाटी, आसाम।
(17) राजकीय ललितकला महाविद्यालय, विद्यापति मार्ग, पटना।
(18) ललित कला महाविद्यालय, सेक्टर 10–सी, चंडीगढ़।
(19) इंन्स्टीट्यूट ऑफ म्यूजिक एण्ड फाईन आर्ट, जवाहर नगर, श्रीनगर।
(20) इंन्स्टीट्यूट ऑफ म्यूजिक एण्ड फाईन आर्ट, एक्सचेंज रोड, जम्मू।
(21) कॉलेज ऑफ फाईन आर्ट, पलयम, तिरुअनन्तपुरम्।
(22) राजकीय ललित कला संस्थान,सनातन धर्म मंदिर मार्ग, ग्वालियर।
(23) राजकीय ललितकला विश्वविद्यालय, कृष्णपुरा ब्रिज, इन्दौर।
(24) इन्दिरा ललित कला विश्वविद्यालय, खेरागढ़, मध्य प्रदेश।
(25) ललितकला संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
(26) राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, किशनपोल बाजार, जयपुर।
(27) दृश्य कला विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

उपरोक्त संस्थाओं के अतिरिक्त देश में कई छोटे–छोटे आर्ट स्कूल हैं साथ ही देश के कई विश्वविद्यालयों में चित्रकला विषय सहित स्नातक एवं चित्रकला में अधिस्नातक पाठ्यक्रम भी प्रचलित हैं।